विषयानुक्रम

1. जैन-दर्शन और योग-दर्शन में कर्म सिद्धान्त 1-16

2. कर्म की विचित्र गति:
मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में: 17-27

3. शरीर-संरचना : नाम कर्म —
आधुनिक शरीर-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में..... 28-66

4. मनोविज्ञान के सन्दर्भ में :
भाग्य को बदलने का सिद्धान्त-संक्रमकरण 67-72

5. कर्मवाद का मनोवैज्ञानिक पहलू 73-82